Vol 7, Issue 5, 2024 **Impact Factor: 5.099** DOI: https://doi.org/10.31426/ijamsr.2024.7.5.7314

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

भारतीय साहित्य में किन्नर विषय

प्रिया यादव (Priya Yadav)
M.A. Hindi
Email: Kmpriyaskb1997@gmail.com

1.परिचय

भारतीय साहित्य में किन्नर समुदाय का उल्लेख प्राचीन काल से होता आ रहा है और इसे विभिन्न दृष्टिकोणों से चित्रित किया गया है। महाकाव्यों और पुराणों से लेकर आधुनिक साहित्य तक, किन्नर समुदाय को एक अनूठी और महत्वपूर्ण भूमिका दी गई है, जो समाज की विविधता और सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाती है। महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में किन्नर समुदाय के सदस्यों का उल्लेख उनके विशिष्ट सामाजिक और धार्मिक योगदान के रूप में मिलता है। मध्यकालीन साहित्य में भी किन्नरों को सामाजिक और धार्मिक समारोहों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हुए दिखाया गया है। आधुनिक साहित्य में किन्नर समुदाय के संघर्ष, जीवन और सामाजिक चुनौतियों को विस्तृत रूप से वर्णित किया गया है, जैसे लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी की आत्मकथा "मी लक्ष्मी, मी हिजड़ा"। भारतीय रंगमंच और नाटक में भी किन्नर समुदाय के सदस्यों के जीवन और संघर्षों को प्रमुखता से दिखाया गया है, जैसे गिरीश कर्नाड का "नागमंडल" और महेश दत्तानी का "सात सूरों के बाज़ार"। कविता और लोक साहित्य में किन्नर समुदाय की विशेषता और उनके अद्वितीय व्यक्तित्व का उल्लेख मिलता है, जिससे उनकी संस्कृति और धरोहर को समाज में सम्मान और पहचान मिलती है। इस प्रकार, भारतीय साहित्य किन्नर समुदाय की आवाज को पहचान और सम्मान प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो समाज में समानता और समरसता को बढ़ावा देता है।

1.1 महाकाव्य और पुराण (महाभारत और रामायण) में किन्नर समुदाय का वर्णन।

महाकाव्य और पुराणों में किन्नर समुदाय का उल्लेख भारतीय समाज में उनकी महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूमिका को दर्शाता है। विशेष रूप से महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में किन्नरों का वर्णन उनके ऐतिहासिक और सांस्कृतिक महत्व को स्पष्ट करता है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

महाभारत: महाभारत में किन्नर समुदाय का उल्लेख कई प्रसंगों में मिलता है। एक प्रमुख उदाहरण अर्जुन का बृहन्नला का रूप धारण करना है। वनवास के दौरान अज्ञातवास में अर्जुन ने बृहन्नला नामक एक किन्नर का वेश धारण किया और विराट नगरी में राजा विराट की राजकुमारी उत्तरा को नृत्य और संगीत की शिक्षा दी। इस प्रसंग से यह स्पष्ट होता है कि किन्नर समुदाय को नृत्य, संगीत और कला में महारत हासिल थी और उन्हें समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त था।

महाभारत में एक और मुख्य पात्र है किन्नर का शिखंडी के रूप, शिखंडी का पूर्व जन्म अंबा नाम की राजकुमारी के रूप में हुआ था। काशीराज की पुत्री अंबा का विवाह हस्तिनापुर के राजा विचित्रवीर्य से करने के लिए भीष्म ने उसका हरण कर लिया था। हालांकि, अंबा पहले से ही शाल्व राजा से प्रेम करती थी और उसे अपना पति मान चुकी थी। जब यह बात भीष्म को पता चली, तो उन्होंने अंबा को शाल्व के पास वापस भेज दिया, लेकिन शाल्व ने उसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि वह भीष्म द्वारा हरित की जा चुकी थी।

इस अपमान और दुर्दशा से पीड़ित होकर अंबा ने भीष्म से प्रतिशोध लेने की ठानी। तपस्या और कठिन साधना के बाद, उसे भगवान शिव से वरदान मिला कि वह अगले जन्म में शिखंडी के रूप में जन्म लेकर भीष्म की मृत्यु का कारण बनेगी। शिखंडी का जन्म द्रुपद के घर हुआ और वह महाभारत के युद्ध में अर्जुन के साथ मिलकर भीष्म का वध करने में सफल हुई। भीष्म ने शिखंडी को कभी नहीं मारा क्योंकि वे जानते थे कि शिखंडी का पूर्व जन्म अंबा के रूप में हुआ था और उसे मारना उनके धर्म के विरुद्ध था। इस प्रकार, अंबा ने शिखंडी के रूप में पुनर्जन्म लेकर अपने प्रतिशोध को पूरा किया।[*]

रामायण: रामायण में भी किन्नर समुदाय का उल्लेख मिलता है। सबसे प्रसिद्ध प्रसंग वह है जब भगवान राम अपने 14 वर्षों के वनवास के दौरान अयोध्या छोड़ते समय किन्नरों को अपने पीछे आता देखते हैं। भगवान राम ने उनसे कहा था कि "पुरुष और स्त्री को मेरे लौटने तक वापस अपने घर लौट जाना चाहिए," लेकिन किन्नरों ने खुद को न तो पुरुष माना और न ही स्त्री, इसलिए उन्होंने राम की आज्ञा का पालन नहीं किया और उनके लौटने तक वहीं वन में उनकी प्रतीक्षा की। जब भगवान राम वनवास के बाद लौटे, तो उन्होंने किन्नरों की भक्ति और निष्ठा से प्रभावित होकर उन्हें आशीर्वाद दिया और उनकी वफादारी की सराहना की। इन महाकाव्यों में किन्नर

[*] https://www.abplive.com/lifestyle/religion/mahabharat-shikhandi-story-in-hindi-connection-of-bhishm-death-story-in-hindi-2432255#:~:text=महाभारत%20के%20अनुसार%20शिखंडी%20पुर्नजन्म,को%20हरण%20कर%20लिया%20था.

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

समुदाय का उल्लेख यह दर्शाता है कि वे प्राचीन भारतीय समाज में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और सामाजिक भूमिका निभाते थे। उनका उल्लेख केवल धार्मिक या पौराणिक कथाओं में ही नहीं, बल्कि साहित्यिक और सांस्कृतिक संदर्भों में भी मिलता है, जो उनकी प्रतिष्ठा और योगदान को दर्शाता है। महाभारत और रामायण में किन्नर समुदाय के सदस्यों का चित्रण यह संकेत देता है कि भारतीय संस्कृति में किन्नरों का स्थान और महत्व समय के साथ स्थिर और आदरणीय रहा है। ये कथाएं न केवल किन्नर समुदाय की ऐतिहासिक उपस्थिति को उजागर करती हैं, बल्कि उनके प्रति समाज के दृष्टिकोण और सम्मान को भी प्रतिबिंबित करती हैं।

वेदो और पुराणो में किन्नरों की स्थिति का वर्णन

वेदों और पुराणों में किन्नरों के विषय में विविध उल्लेख हैं। ये उल्लेख अलग-अलग शाखाओं और संप्रदायों में भिन्न-भिन्न रूपों में पाए जाते हैं।

1. वेदों में:

वेदों में किन्नरों के बारे में सीधा उल्लेख नहीं है, लेकिन कुछ ऋषियों के संबंध में किन्नरों का उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, ऋग्वेद में "अप्सरा" के बारे में विवरण मिलता है, जो किन्नरों की तरह देवता और मानवों के बीच में आत्मिक और भौतिक संबंधों के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत की गई हैं।

2. पुराणों में:

पुराणों में किन्नरों के विस्तारपूर्ण विवरण मिलते हैं। ये अकसर देवताओं के साथ संबंधित होते हैं और स्वर्ग में निवास करते हैं। विष्णु पुराण, भागवत पुराण, शिव पुराण, गरुड़ पुराण आदि में किन्नरों का उल्लेख है। उन्हें अक्सर देवताओं के सेवक, गायक, और नृत्य कला के शिक्षक के रूप में वर्णित किया जाता है।

किन्नरों की स्थिति को संबंधित पुराणों में सामाजिक और आध्यात्मिक दृष्टि से विस्तार से विवरण किया गया है, जो उन्हें दिव्य और महत्वपूर्ण स्थान देता है।

समीक्षा

डिसूजा, शरीन, और अन्य, (2024): ऐतिहासिक हाशिए पर और स्वास्थ्य और सरकारी प्रणालियों में चल रहे विश्वास की कमी, हाशिए पर रहने वाले समुदायों के बीच वर्तमान वैक्सीन धारणाओं को आकार देती है। इस पेपर में भारत में ट्रांसजेंडर और विकलांग समुदायों में COVID-19 वैक्सीन के बारे में निर्णय लेने में विश्वास की भूमिका को समझने की कोशिश की गई है। भागीदारी दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए हमने 24 सामुदायिक

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रतिनिधियों का साक्षात्कार लिया, जिन्होंने खुद को ट्रांसजेंडर व्यक्तियों या विकलांग व्यक्तियों के रूप में पहचाना, और 21 प्रमुख मुखबिरों जैसे कि वैक्सीन कार्यक्रम प्रबंधकों, वैक्सीन प्रदाताओं और सामुदायिक अधिवक्ताओं का साक्षात्कार लिया। हमने सामाजिक-पारिस्थितिक मॉडल का उपयोग करके डेटा का एक आगमनात्मक विषयगत विश्लेषण किया। दो समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं के संबंध में दुष्प्रभावों के डर और टीकाकरण में शामिल प्रणालियों के अविश्वास ने टीका निर्णय लेने के लिए चार अलग-अलग मार्गों को आकार दिया। सिस्टम के प्रति अविश्वास स्वास्थ्य प्रणाली के साथ पिछले नकारात्मक अनुभवों से प्रभावित था, जिससे ऐसे संदर्भ बने जिनमें जानकारी और गलत सूचना साझा की गई और व्याख्या की गई। प्रतिभागियों ने निर्णय लेने के पैटर्न को दिखाते हुए प्रभाव के विभिन्न स्रोतों के साथ बातचीत करके सिस्टम की सुरक्षा और अविश्वास के बारे में अपने संदेहों पर बातचीत की, जो गतिशील, संदर्भ-निर्भर और परस्पर विरोधी हैं। ये निष्कर्ष इन दोनों समुदायों के लिए न्यायसंगत वैक्सीन संचार की सामग्री, रणनीतियों और दृष्टिकोण को निर्धारित करने में मदद करेंगे। दोनों समुदायों को वैक्सीन परीक्षणों में शामिल किया जाना चाहिए। टीके की जानकारी को इन दो समुदायों की विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुरूप होना चाहिए, जिसे समुदाय के सदस्यों और प्रभावशाली लोगों के साथ सहयोग और जुड़ाव द्वारा सक्षम किया जा सकता है। अंत में, हाशिये पर पड़े समुदायों की जरूरतों के प्रति दीर्घकालिक निवेश हाशिए पर रहने और अविश्वास के चक्र को खत्म करने और बदले में टीके की स्वीकृति और उठाव में सुधार के लिए महत्वपूर्ण है।

यादव एट अल., (2022): 'क्वीर' शब्द समलैंगिक, समलैंगिक, उभयलिंगी और ट्रांसजेंडर लोगों सहित एलजीबीटी समुदाय पर लागू होता है। मानव जाति का इतिहास बताता है कि यह समुदाय समाज के लिए एक कलंक है। अप्राकृतिक इन लोगों की कामुकता और असामान्य व्यवहार समाज में अस्वीकार्य है। एलजीबीटी लोगों को जीवन के सभी क्षेत्रों में भेदभाव का सामना करना पड़ता है। भारतीय संदर्भ में, इन लोगों को यौन अल्पसंख्यकों से संबंधित होने के कारण उनके परिवारों द्वारा भी खारिज कर दिया जाता है उन्होंने ईश्वर की सेवा के लिए इस जीवन को चुना है। साहित्य समाज में एलजीबीटी समुदाय के अस्तित्व की कठोर वास्तविकता की पड़ताल करता है। साहित्यिक चित्रणों के कारण, ट्रांसजेंडर को सामाजिक दर्जा आवंटित करने की आवश्यकता को समझना संभव है एक इंसान के रूप में अपने अस्तित्व और अस्तित्व की लड़ाई को दिखाने के लिए समलैंगिक और लेस्बियन लोगों को भी फिल्मों में चित्रित किया जाता है। सामाजिक क्रांति की लहर ने कानूनों की मदद से अपनी सामाजिक स्थिति को बदलने के लिए सामान्य मनुष्यों की मानसिकता को भी बदल दिया है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

प्रस्तुत पेपर में समलैंगिक समुदाय के बारे में लोगों के दृष्टिकोण में सकारात्मक बदलाव के लिए भारतीय साहित्य और फिल्मों में परिलक्षित एलजीबीटीक्यू समुदाय की कठोर वास्तविकताओं के बीच संबंध का पता लगाने का प्रयास किया गया है।

एस्किसिओग्लू, लेले। उत्तर उपनिवेशवाद से परे (2022)। मुंबई और लागोस जैसे महानगरों का इक्कीसवीं सदी का साहित्य उनके लिए बताई गई उत्तर-औपनिवेशिक स्थिति से दूर जा रहा है। चूँकि साम्राज्य पर वापस लिखना अब उनके शहरों के अधिक सटीक प्रतिनिधित्व के अनुरूप नहीं है, मुंबई और लागोस का समकालीन साहित्य वर्तमान समय के मौजूदा मुद्दों के साथ नए जुड़ाव की ओर बढ़ रहा है। भारत और नाइजीरिया में साहित्यिक प्रवृत्तियाँ हमारे समय के सामाजिक-राजनीतिक परिदृश्य पर एक शहरी मोड़ और एक सामाजिक यथार्थवादी फोकस प्रदर्शित करती हैं जिसमें भ्रष्टाचार, असमानता और बहिष्कार, बेरोजगारी, अनौपचारिक बस्तियाँ, स्वच्छता, बुनियादी ढाँचा और निष्क्रिय संस्थाएँ शामिल हैं। हालाँकि इनमें से कई दुर्दशाओं का कारण औपनिवेशिक प्रथाओं में निहित है, लेकिन उनका निरंतर उछाल और प्रभाव दुर्बल करने वाला बना हुआ है। समसामयिक लेखक उन शहरों के औपनिवेशिक इतिहास को स्वीकार करना जारी रखते हैं जिनका वे वर्णन करते हैं; हालाँकि, वे अब अतीत के अन्यायों पर ध्यान देने के बजाय वर्तमान समस्याओं के प्रति जागरूकता ला रहे हैं। ये हालिया आख्यान, जिस शैली में उल्का अंजारिया ने 'नया सामाजिक यथार्थवाद' कहा है, मध्यम वर्ग के आराम क्षेत्रों को बाधित करती है और इस समूह और अन्य लोगों को अपने व्यक्तिगत और सामाजिक कार्यों का पुनर्मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करना है। मेरा तर्क है कि मुंबई और लागोस की इक्कीसवीं सदी की साहित्यिक कथाएँ, विविध और नवीन शैलियों को नियोजित करते हुए, अपने दर्शकों को प्रचलित शहरी समस्याओं को बनाए रखने में फंसाती हैं। रचनात्मक शैलियों और अस्थिर सौंदर्यशास्त्र के माध्यम से, समकालीन शहरी साहित्य तत्काल वास्तविकता की एक नई सामाजिक चेतना को प्रकट करता है। इस शोध प्रबंध में जांचे गए मुख्य संग्रह में इक्कीसवीं सदी में प्रकाशित शहरी उपन्यास और लघु कथाएँ शामिल हैं, जबकि अच्छी तरह से स्थापित भारतीय और नाइजीरियाई लेखकों के पहले के कार्यों से भी ली गई हैं। मैं रोहिंटन मिस्त्री द्वारा फैमिली मैटर्स, चिबुंडु ओनुज़ो द्वारा वेलकम टू लागोस, अरविंद अडिगा द्वारा लास्ट मैन इन टॉवर, क्रिस अबानी द्वारा ग्रेस्कलैंड, मुर्ज़बान एफ द्वारा ब्रेथलेस इन बॉम्बे में भ्रष्टाचार, औपचारिक और अनौपचारिक पड़ोस, और बुनियादी ढांचे और यातायात के आख्यानों की जांच करता हूं। श्रॉफ, अल्ताफ टायरवाला द्वारा नो गॉड इन साइट, ननेडी ओकोराफोर द्वारा लैगून, और चिमामांडा अदिची द्वारा "बर्डसॉन्ग" और अमेरिकनाह। वर्तमान

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

समय पर जोर देने के साथ, मुंबई और लागोस के ये समकालीन शहरी आख्यान सामाजिक टिप्पणी पेश करते हैं और जो आदतन, परिचित और अदृश्य हो गया है उसे बाधित करते हैं।

नज़ीर, फिरदौस (2021)। उभयलिंगीपन की उत्पत्ति और विकास के संबंध में शास्त्रीय काल के दार्शनिक, साहित्यिक और धार्मिक ग्रंथों में विभिन्न किंवदंतियाँ और मिथक हैं। वेद अंतर्लिंगी लोगों की भूमिका को बाहर नहीं करते हैं। वैदिक काल में ट्रांसजेंडर या इंटरसेक्स लोगों का जीवन एक साथ सम्मानजनक और संतुष्ट था। मध्य युग में, ट्रांसजेंडर या इंटरसेक्स लोगों की स्थिति में भारी बदलाव आया, ट्रांस-लोगों में लिंग डिस्फोरिया एक मनोवैज्ञानिक विकार तेजी से बढ़ रहा था। प्राचीन काल से ही लोग सांस्कृतिक रूप से विविध भारत की खोज कर रहे हैं, वे अपने अन्वेषण से हमारे लिए अलग-अलग प्रवचन लेकर आए हैं जैसे कि उपनिवेशवाद, उत्तर-उपनिवेशवाद, राष्ट्रवाद, अंतर्राष्ट्रीयतावाद और कई अन्य लेकिन अंतरलिंगी लोगों के मुद्दों पर सबसे कम ध्यान दिया गया है। यह पेपर मानता है कि समकालीन भारत सांस्कृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक अराजकता का सामना कर रहा है, और प्रचलित अराजकता में, एलजीबीटी जैसे अल्पसंख्यक रॉय के द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस के संदर्भ में पीड़ित हैं।

दास, विष्णुप्रिया।, (2021)। यह परियोजना इस बात पर विचार करती है कि भारत के डेटिंग और डेटिंग से जुड़े ऐप उद्योगों में काम करने वाले निर्माताओं द्वारा अंतरंग संभावना के बारे में विचारों की कल्पना, मार्गदर्शन और समावेशन कैसे किया जाता है। वर्तमान में, डेटिंग और निकटवर्ती ऐप्स पर विस्तारित शोध उपयोगकर्ता अनुभवों और ऐप इंटरफ़ेस गतिशीलता पर ध्यान केंद्रित करता है। एक वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रदान करते हुए, मैं अपने विश्लेषण को एक उभरते डेटिंग ऐप कॉर्पोरेट पारिस्थितिकी तंत्र की उत्पादन संस्कृतियों के भीतर स्थित करता हूं ताकि उभरते, जटिल और विरोधाभासी तरीकों को बेहतर ढंग से मैप किया जा सके, जिससे डिजिटल रूप से मध्यस्थता वाली अंतरंगता के तर्कों को एक विशेष क्षेत्रीय संदर्भ में संशोधित और अनुकूलित किया जा सके। भारत में कॉर्पोरेट मीडिया/टेक उद्योग के भीतर अपने फील्डवर्क को स्थापित करके मैं दिखाता हूं कि तेजी से राष्ट्रीय डिजिटलीकरण की प्रक्रिया में निहित कुछ घर्षण इस उभरती साइट में कैसे दूर हो जाते हैं। मेरा तर्क है कि तेजी से डिजिटल होते देश (भारत) की पृष्ठभूमि में, डेटिंग और डेटिंग ऐप्स, अंतरंग मुठभेड़ों के लिए 'नए' क्षेत्र (डिजिटल और भौतिक दोनों) बनाने के लिए कई प्रकार के अंतरंग संबंधों की संभावनाओं को बंद कर देते हैं। इस उद्देश्य से, मैं तीन केस अध्ययन प्रस्तुत करता हूँ। प्रत्येक मामला संदर्भ के एक अलग फ्रेम के भीतर ऐप

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

कंपनियों की उत्पादन प्रथाओं की जांच करता है: लिंग की सांस्कृतिक राजनीति से शुरू होकर, विचित्रता की कल्पनाओं की ओर बढ़ते हुए, और अंत में अंतरिक्ष की राजनीति की परीक्षा में समाप्त होता है। इन मामलों में मेरे द्वारा किए गए अवलोकन 2016 और 2019 के बीच भारत के बड़े प्रौद्योगिकी केंद्रों (जैसे, दिल्ली, बैंगलोर, मुंबई) में आठ महीने के नृवंशविज्ञान क्षेत्र कार्य पर आधारित हैं। पहले मामले के अध्ययन में, मैं दो बड़े लोगों के आउटरीच और ब्रांडिंग प्रयासों का पता लगाता हूं डेटिंग ऐप कंपनियां (टिंडर और ट्रूली मैडली) पहली बार भारतीय उपयोगकर्ता आधार पर पहुंच रही हैं, यह बताने के लिए कि किस तरह इच्छा और वांछनीयता के उचित रूपों के कॉर्पोरेट आख्यान अत्यधिक लिंग आधारित हैं और मध्यम वर्ग की महिलाओं की सुरक्षा और सुरक्षा की तत्काल आवश्यकता के आसपास तैयार किए गए हैं। निम्न वर्ग के पुरुष. इसके अतिरिक्त, मैं यह भी देखता हूं कि ये ऐप्स कौन हैं, इसका वर्णन करने वाला प्रवचन कैसे गतिशील रूप से उपयोगकर्ता की मांगों के अनुरूप होता है। दूसरे मामले के अध्ययन में मैं भारत के पहले "घरेलू" समलैंगिक डेटिंग ऐप - डेल्टा के उत्पादन निर्णयों पर गहराई से नज़र डालूंगा। यहां, मैं विश्लेषण करता हूं कि विचित्रता के लचीले, क्षणिक, तरल गुण फंडिंग के दबाव, डिजिटल डिजाइन के मानदंडों और क्षेत्र में समलैंगिकता के अपराधीकरण के परिणामों के साथ कैसे जुड़ते हैं। तीसरे मामले के अध्ययन में, मैंने ऑनलाइन 'लव होटल' एग्रीगेशन ऐप स्टे अंकल की बारीकी से जांच के माध्यम से पिछले अध्यायों में संक्षेप में हाइलाइट किए गए स्थान और स्थान के प्रश्नों को केंद्र में रखा है, जो ऑनलाइन संचार से सन्निहित अंतरंग में संक्रमण के समन्वय में शामिल विचारों को उजागर करने का एक तरीका है। भारत में ऑफ़लाइन अनुभव, विशेषकर छोटे शहरों में। ऐसा करते हुए, मैं उन तरीकों का संदर्भ देता हूं जिनमें अंतरंग संपर्क के लिए निजी स्थानों को क्यूरेट किया जाता है और स्टे अंकल जैसे डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से जनता के लिए दृश्यमान बनाया जाता है। पूरे प्रोजेक्ट के दौरान, मैं स्पष्ट करता हूं कि क्षेत्रीय परिस्थितियां ऐप निर्माताओं द्वारा अपनाए जाने वाले जटिल और विरोधाभासी दृष्टिकोण को कैसे प्रभावित करती हैं।

बानो, शमेनाज़।, (2019)। जैसा कि हम सभी जानते हैं कि हाशिए पर रहने वाले वर्ग वे वर्ग हैं जिन्हें अन्य समूहों द्वारा कम महत्व के लोगों के रूप में माना जाता है जो सत्ता में हैं या खुद को उनसे श्रेष्ठ मानते हैं। जब भारत की बात आती है तो कुछ ऐसे वर्ग हैं जिन्हें हाशिए पर माना जाता है यानी दलित, आदिवासी। इस सूची में महिलाएं और ट्रांसजेंडर भी शामिल हैं। भारतीय सामाजिक-राजनीतिक परिवेश में दलितों और अन्य वंचित वर्गों पर समय-समय पर बहस होती रही है और जो समसामयिक परिदृश्य में भी चलती रहती है। 'दलित' शब्द संस्कृत

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

के दलित शब्द से बना है जिसका अर्थ है 'उत्पीड़ित'। यदि हम भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ पर ध्यान दें तो हम देखते हैं कि 'दलित' का तात्पर्य अछूतों और तीन जातियों: ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य से नीचे के लोगों से है और जिनका जीवन का एक लंबा इतिहास है। भारतीय समाज में दलित कहे जाने वाले इन लोगों का भारतीय समाज के उच्च वर्गों के अधीन अधीनता में रहने का इतिहास रहा है। इसलिए वे सदियों से एक हाशिए पर, दलित और निम्नवर्गीय समूह रहे हैं। तथ्य यह है कि यदि हम 'हाशिए पर स्थित वर्ग' शब्द पर चर्चा करें तो भारत, एक पितृसत्तात्मक समाज होने के नाते, महिलाएं भी इस श्रेणी में आती हैं और वे सदियों से अधीन रही हैं। इतिहास में जिस वर्ग पर बहुत कम चर्चा हुई है उनमें से एक शब्द है 'ट्रांसजेंडर' जिस पर भी ध्यान देने की जरूरत है क्योंकि यह भी सबसे वंचित वर्गों में से एक है। अपने पेपर में, मैं उन विभिन्न लेखकों और सुधारकों पर चर्चा करने की कोशिश कर रहा हूं जिन्होंने भारत में इन हाशिए पर मौजूद वर्गों के उत्थान के नेक काम के लिए अपना जीवन दिया है।

मोनाको, एंजेलो (2018)। भले ही रॉय ने अपने बुकर-विजेता पहले उपन्यास, द गॉड ऑफ स्मॉल थिंग्स (1997) में कुछ जादुई यथार्थवादी तत्वों का इस्तेमाल किया हो, लेकिन उनके दूसरे उपन्यास, द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस (2017) में फंतासी और यथार्थवाद का उपयोग कम चिंतित है। वैश्विक-विरोधी की तुलना में एक सौंदर्यात्मक कार्य। उपन्यास में, असुरक्षा की छवियां व्यक्तियों और पर्यावरण को समान रूप से प्रभावित करती हैं, जो न केवल नुकसान की कविता को बढ़ावा देती हैं, बल्कि वैश्वीकरण विरोधी, पर्यावरणवाद, परमाणु विरोधी अभियान और कश्मीर में भूमि अधिकार जैसे सामाजिक सवालों की एक कट्टरपंथी आलोचना भी करती हैं। यह लेख रॉय के अंतिम उपन्यास में भारती फंतासी और ऐतिहासिक यथार्थवाद की तुलना की पड़ताल करता है और यह उन तरीकों की जांच करता है जिसमें एक संकर कथा प्रारूप समकालीन भारत के एक जटिल और समृद्ध कथानक को व्यक्त करने का प्रबंधन करता है, जहां लिंग प्रश्न, जाति भेदभाव, घायल परिदृश्य और धार्मिक संघर्ष क्षय और आशा की कहानी को जीवंत करते हैं। एक ओर हिंदू महाकाव्यों और दूसरी ओर अपने गैर-काल्पनिक कार्यों की विशिष्ट बौद्धिक सक्रियता का सहारा लेकर, रॉय वर्तमान उत्तर-औपनिवेशिक भारत के विरोधाभासों को ध्यान में रखने के लिए चेतावनी और निमंत्रण दोनों जारी करती हैं।

मंडल, विकास चंद्रा, और ब्रिंटिका दास। (2017) भारत में विचित्र और कामुकता अध्ययन में विकास के बावजूद, दार्जिलिंग और सिक्किम की पहाड़ियों में विचित्र साहित्यिक और सामाजिक अनुसंधान के क्षेत्र में एक स्पष्ट अंतर मौजूद है। यह अध्याय नेपाली (1989-2021) में साहित्यिक ग्रंथों का पता लगाता है और उनका

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

विश्लेषण करता है, जो पहाड़ियों में समलैंगिक संस्कृतियों पर गंभीर चर्चा शुरू करने के प्रयास में, विचित्र कामुकता और पहाड़ियों में उनके प्रतिनिधित्व से संबंधित हैं। यह अध्याय नौ नेपाली भाषा के लेखकों/कवियों (जिन्हें समलैंगिक के रूप में पहचाना जाना आवश्यक नहीं है) के कार्यों पर केंद्रित है, जिन्होंने विशेष रूप से क्षेत्र से संबंधित एलजीबीटीक्यू+ मुद्दों पर लिखा है, विशेष रूप से पहचान की राजनीति, लिंग संबंधी अन्यता और सामाजिक-सांस्कृतिक पहलुओं से संबंधित हैं। प्रतिनिधित्व. इस विशिष्ट क्षेत्र में पहले अध्ययन के रूप में, यह शोध हिल्स के लिए विशिष्ट विचित्र कामुकताओं की व्यक्तिपरक समझ को उजागर करता है और कैसे विचित्र विषय विषमलैंगिकता और विषमलैंगिकता पर बातचीत करते हैं।

लोह, जेनिफर उनग (2014)। यह लेख बताता है कि कैसे भारत के हिजड़े और किन्नर पहचान-निर्माण में पौराणिक कथाओं का उपयोग करते हैं। समकालीन भारत में, हिजड़े एक अल्पसंख्यक समूह हैं जिन्हें उनके गैर-विषम लिंग प्रदर्शन और शारीरिक प्रस्तुतियों के परिणामस्वरूप मुख्यधारा के समाज से बहिष्कृत कर दिया गया है। हिजड़े अपने दैनिक जीवन में भेदभाव और हाशिए पर रहने का सामना करते हैं, जिससे वे जन्मजात परिवारों और रिश्तेदारी संरचनाओं के बाहर अपने स्वयं के सामाजिक समूह बनाते हैं। पौराणिक और साहित्यिक आख्यान हिजड़ों के विशिष्ट व्यवहार पैटर्न, अनुष्ठान प्रथाओं और शारीरिक रूपों को समझाने और वैध बनाने और इस पहचान के आसपास के कुछ कलंक को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इस लेख में, मैं कुछ आख्यानों पर ध्यान केंद्रित करता हूं जिनका उपयोग हिजड़े अपने जीवन को समझने और अर्थ देने के लिए करते हैं, जिसमें अस्पष्ट लिंग के लोगों से संबंधित पौराणिक कहानियां और बहुचरा माता से जुड़े मिथक शामिल हैं। मेरा तर्क है कि ये सत्तामूलक आख्यान हिजड़ा पहचान को अस्तित्व में लाने का काम करते हैं और आधुनिक भारत में हिजड़ा पहचान के निर्माण और प्रमाणीकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शेलार, संजय तुलसीराम। सूफीवाद, जो इस्लाम के प्रति रहस्यमय भक्ति का प्रतीक है, विश्व आध्यात्मिक और तुलनात्मक अध्ययन दोनों में प्रवचन और अध्ययन के सबसे लोकप्रिय और आकर्षक क्षेत्रों में से एक है। हमने लगभग तीन महीनों में भारत के कई धार्मिक स्थलों का दौरा करके समकालीन सूफियों की खोज की और उनकी जांच की, यह ऐतिहासिक शोध है, भारत में सूफी ग्रंथों के गुरुओं में महिलाएं कैसे भाग लेती हैं, यह एक चुनौती है लेकिन इस्लामी नारीत्व के प्रचलित आदर्शों को एक हिस्से के रूप में बनाए रखती है। सांस्कृतिक और

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

धार्मिक परिदृश्य, क्योंकि स्थानीय सूफियों और धार्मिक स्थानों के स्थानीय मूर्खों को खारिज करने के बजाय, मुस्लिम समुदाय को मजबूत करने के सामान्य उद्देश्यों के बारे में हमेशा बहस होती रहती है।

III. धार्मिक और सामाजिक महत्व

महाकाव्य और पुराणों में किन्नर समुदाय के उल्लेख से उनके धार्मिक और सामाजिक महत्व का स्पष्ट पता चलता है। भारतीय संस्कृति में किन्नर समुदाय का स्थान और महत्व सदियों से आदरणीय और स्थिर रहा है। यहां हम किन्नर समुदाय के धार्मिक और सामाजिक महत्व का विस्तृत विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं।

धार्मिक महत्व

आध्यात्मिकता और देवताओं से संबंध: किन्नर समुदाय को प्राचीन भारतीय धर्म और मिथकों में देवताओं और दिव्य शक्तियों के साथ जोड़ा गया है। कई पौराणिक कथाओं में किन्नरों को स्वर्ग में संगीत, नृत्य और कला की सेवा करते हुए दिखाया गया है। वे देवताओं के प्रति अपनी भक्ति और सेवा के लिए जाने जाते थे। उदाहरण के लिए, पुराणों में किन्नरों को भगवान शिव और भगवान विष्णु के भक्तों के रूप में वर्णित किया गया है।

महाकाव्यों में भूमिका: महाभारत और रामायण जैसे महाकाव्यों में किन्नरों का उल्लेख उनके धार्मिक महत्व को और भी गहरा बनाता है। महाभारत में, अर्जुन द्वारा बृहन्नला का वेश धारण करना और रामायण में भगवान राम के प्रति किन्नरों की भक्ति इन कथाओं को धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण बनाती है।

आशीर्वाद और श्राप: कई धार्मिक कथाओं में किन्नरों को आशीर्वाद देने और श्राप देने की शक्ति से युक्त माना गया है। उनका आशीर्वाद शुभ और फलदायक माना जाता है, इसलिए विवाह, जन्म, और अन्य शुभ अवसरों पर किन्नरों का आना और उनका आशीर्वाद देना शुभ माना जाता है।

सामाजिक महत्व

सांस्कृतिक और सामाजिक समावेशिता: भारतीय समाज में किन्नरों की उपस्थिति और उनकी स्वीकृति समाज की विविधता और समावेशिता को दर्शाती है। वे समाज के अन्य वर्गों की तरह ही समाज का अभिन्न हिस्सा रहे हैं और उनकी भूमिका को समाज में सम्मानित स्थान प्राप्त हुआ है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

समारोहों और उत्सवों में भागीदारी: किन्नरों की सामाजिक भूमिका खासकर विवाह, जन्म, और अन्य महत्वपूर्ण सामाजिक समारोहों में महत्वपूर्ण होती है। उनका आशीर्वाद इन अवसरों पर शुभ माना जाता है, और उनकी उपस्थिति समारोहों में खुशी और समृद्धि लाने के लिए मानी जाती है।

कला और संस्कृति में योगदान: किन्नर समुदाय का नृत्य, संगीत और कला में योगदान महत्वपूर्ण रहा है। महाभारत में बृहन्नला के रूप में अर्जुन द्वारा नृत्य और संगीत सिखाने का प्रसंग यह दर्शाता है कि किन्नरों को इन कलाओं में महारत हासिल थी। उनके द्वारा निभाई गई सांस्कृतिक भूमिकाओं ने भारतीय कला और संस्कृति को समृद्ध किया है।

समाज में सम्मान और आदर: धार्मिक और पौराणिक कथाओं में किन्नरों के उल्लेख ने समाज में उनके प्रति आदर और सम्मान को बनाए रखा है। उनके प्रति समाज की संवेदनशीलता और स्वीकार्यता ने किन्नर समुदाय के सदस्यों को सामाजिक समानता और सम्मान के साथ जीने में मदद की है।

इस प्रकार, महाकाव्य और पुराणों में किन्नर समुदाय का धार्मिक और सामाजिक महत्व भारतीय समाज की गहरी सांस्कृतिक धरोहर को दर्शाता है। यह समुदाय न केवल धार्मिक कथाओं में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, बल्कि समाज में समावेशिता, कला, और संस्कृति के विकास में भी अपना महत्वपूर्ण योगदान देता है।

IV. सामाजिक और धार्मिक समारोहों में किन्नरों की भूमिका

भारतीय समाज में किन्नर समुदाय का एक विशेष स्थान है, और सामाजिक तथा धार्मिक समारोहों में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। विवाह समारोह में किन्नरों की उपस्थिति को अत्यंत शुभ माना जाता है। वे दूल्हा-दुल्हन को आशीर्वाद देने और समारोह की खुशियों में शामिल होने के लिए आमंत्रित किए जाते हैं। किन्नर अपने पारंपरिक नृत्य और गीतों के माध्यम से समारोह में उत्साह और उल्लास का संचार करते हैं, और उनका आशीर्वाद नवविवाहित जोड़े के लिए खुशहाल और समृद्ध जीवन का प्रतीक माना जाता है। जब किसी घर में बच्चे का जन्म होता है, तो किन्नर समुदाय के सदस्य परिवार में आकर बच्चे को आशीर्वाद देते हैं, जो बच्चे के अच्छे स्वास्थ्य, दीर्घायु और उज्ज्वल भविष्य के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है। गृह प्रवेश और अन्य शुभ अवसरों

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

पर भी किन्नरों को आमंत्रित किया जाता है, और उनकी उपस्थिति घर और परिवार के लिए सौभाग्य और समृद्धि का प्रतीक मानी जाती है।

धार्मिक समारोहों में भी किन्नर समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वे विभिन्न त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों में सक्रिय भागीदारी करते हैं, मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर जाकर पूजा-अर्चना करते हैं, और अपने समुदाय के लिए आशीर्वाद मांगते हैं। कुंभ मेला जैसे बड़े धार्मिक आयोजनों में किन्नर समुदाय की विशेष उपस्थिति होती है, जहां वे अपने पारंपरिक वेशभूषा और सजधज के साथ भाग लेते हैं और अपनी धार्मिक आस्थाओं को प्रकट करते हैं। जन्माष्टमी और रामलीला जैसे धार्मिक नाटकों में भी किन्नर समुदाय की भागीदारी होती है, जहां वे अपने अभिनय और नृत्य के माध्यम से भगवान कृष्ण और भगवान राम की कथाओं को जीवंत बनाते हैं। उनके प्रदर्शन धार्मिक समारोहों में उत्साह और भक्ति का संचार करते हैं।

समाज में किन्नर समुदाय का योगदान केवल धार्मिक और सामाजिक समारोहों तक सीमित नहीं है, बल्कि वे समाज की भलाई और विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। वे अपने समुदाय के लोगों को शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक समर्थन प्रदान करने के लिए विभिन्न गतिविधियों में संलग्न होते हैं, और उनके संगठन और समूह सामाजिक कल्याण और अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य करते हैं। इस प्रकार, किन्नर समुदाय की सामाजिक और धार्मिक समारोहों में भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और आदरणीय होती है। उनका आशीर्वाद और उपस्थिति समाज में शुभता, समृद्धि, और खुशहाली का प्रतीक माने जाते हैं, जिससे उनकी धार्मिक और सामाजिक महत्व को मान्यता मिलती है। समाज में उनकी भूमिका केवल सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा नहीं है, बल्कि वे समाज के समावेशी और सशक्तिकरण के प्रतीक भी हैं।

V. सूफी और भक्ति साहित्य में किन्नर समुदाय का उल्लेख

सूफी और भक्ति साहित्य में किन्नर समुदाय का उल्लेख गहरी संवेदनशीलता और आध्यात्मिकता के साथ किया गया है, जो उनके धार्मिक और सामाजिक महत्व को दर्शाता है। सूफी और भक्ति परंपराओं ने समाज के हर वर्ग को समान रूप से स्वीकार किया और उनके माध्यम से प्रेम, भक्ति और समर्पण के संदेश को फैलाया।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सूफी साहित्य में किन्नर समुदाय: सूफी साहित्य में किन्नर समुदाय का उल्लेख उनकी आध्यात्मिक खोज और परमात्मा के प्रति समर्पण के संदर्भ में किया गया है। सूफी संतों ने मानवता के सभी वर्गों को, चाहे वे किसी भी लिंग या जाति के हों, अपनी शिक्षाओं में शामिल किया। सूफीवाद का मुख्य संदेश ईश्वर के प्रति निस्वार्थ प्रेम और समर्पण है, और इसमें किन्नर समुदाय को भी एक महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। सूफी कवि और संत, जैसे बुल्ले शाह और रूमी, ने अपने काव्य में मानवीय एकता और प्रेम का संदेश दिया है, जिसमें किन्नर समुदाय की भी अहम भूमिका है। सूफी दरगाहों पर आज भी किन्नर समुदाय के सदस्य श्रद्धा और भक्ति के साथ जाते हैं और अपनी आस्था प्रकट करते हैं।

भक्ति साहित्य में किन्नर समुदाय: भक्ति आंदोलन के दौरान भी किन्नर समुदाय का उल्लेख मिलता है। भक्ति संतों ने अपने भजनों और कविताओं में सामाजिक समरसता और आध्यात्मिक एकता का संदेश दिया। वे मानते थे कि ईश्वर के प्रेम में सभी समान हैं और भक्ति का मार्ग सबके लिए खुला है। कबीर, सूरदास, और तुलसीदास जैसे भक्ति कवियों ने अपने साहित्य में मानवता के प्रति प्रेम और समर्पण के संदेश को प्रमुखता दी। उनके अनुसार, किसी व्यक्ति का लिंग, जाति, या सामाजिक स्थिति उसकी भक्ति को प्रभावित नहीं करती। भक्ति साहित्य ने किन्नर समुदाय को भी आध्यात्मिकता के इस सागर में एक समान अधिकार दिया।

कुल मिलाकर: सूफी और भक्ति साहित्य ने किन्नर समुदाय को एक विशिष्ट और सम्मानजनक स्थान दिया है। इन साहित्यिक परंपराओं ने किन्नरों को समानता, प्रेम, और भक्ति के आधार पर समाज का अभिन्न हिस्सा माना। किन्नर समुदाय के सदस्यों को भी आध्यात्मिकता और धार्मिकता के इस सागर में एक महत्वपूर्ण स्थान मिला है, जो दर्शाता है कि भारतीय समाज में उनकी भूमिका और महत्व को हमेशा से मान्यता मिली है। इन साहित्यिक कृतियों ने समाज में किन्नर समुदाय के प्रति संवेदनशीलता और स्वीकृति को बढ़ावा दिया, जिससे उनकी सामाजिक और धार्मिक स्थिति को मजबूती मिली है।

VI. किन्नर समुदाय के संघर्ष, जीवन और सामाजिक चुनौतियां

किन्नर समुदाय, जिसे हिजड़ा, ट्रांसजेंडर, और अन्य नामों से भी जाना जाता है, भारत में एक विशिष्ट और ऐतिहासिक रूप से मान्यता प्राप्त सामाजिक समूह है। हालांकि किन्नरों को भारतीय संस्कृति और समाज में एक महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है, लेकिन वे कई प्रकार के संघर्षों, जीवन की कठिनाइयों और सामाजिक चुनौतियों का

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

सामना करते हैं। यहाँ किन्नर समुदाय के संघर्ष, जीवन और सामाजिक चुनौतियों का विस्तृत विवरण दिया गया है:

संघर्ष

पहचान और स्वीकृति

- किन्नर समुदाय के सदस्यों को अक्सर अपनी लैंगिक पहचान के लिए संघर्ष करना पड़ता है। समाज में उनकी पहचान को स्वीकार करना कठिन होता है, जिससे वे मानसिक और भावनात्मक तनाव का सामना करते हैं।
- सरकारी दस्तावेजों और पहचान पत्रों में उचित लैंगिक पहचान प्राप्त करने के लिए उन्हें कानूनी लड़ाई लड़नी पड़ती है।

कानूनी और सामाजिक अधिकार

- कानूनी अधिकारों की कमी और भेदभावपूर्ण नीतियों के कारण किन्नर समुदाय के सदस्य अक्सर न्याय से वंचित रहते हैं।
- भले ही भारत में 2014 में सुप्रीम कोर्ट ने ट्रांसजेंडर लोगों को थर्ड जेंडर के रूप में मान्यता दी, लेकिन वास्तविकता में उनके कानूनी अधिकारों की पूर्णतः रक्षा नहीं हो पाती।

जीवन की कठिनाइयाँ

आर्थिक समस्याएं:

- किन्नर समुदाय के अधिकांश सदस्यों को नौकरी पाने में कठिनाई होती है। शिक्षा और रोजगार के अवसरों की कमी के कारण वे अक्सर आर्थिक रूप से पिछड़े रहते हैं।
- मजबूरी में उन्हें भीख मांगने, यौन कार्य या अन्य अनौपचारिक व्यवसायों का सहारा लेना पड़ता है, जिससे उनकी आर्थिक स्थिति और भी दयनीय हो जाती है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

स्वास्थ्य और चिकित्सा सुविधाएं:

- किन्नर समुदाय के सदस्य स्वास्थ्य सेवाओं तक पहुँचने में कठिनाई का सामना करते हैं। चिकित्सा सेवाओं में भेदभाव और उचित देखभाल की कमी के कारण उनकी स्वास्थ्य स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
- यौन संचारित संक्रमणों (STIs) और HIV/AIDS की उच्च दर उनके स्वास्थ्य पर गंभीर संकट पैदा करती है।

सामाजिक चुनौतियाँ

- भेदभाव और हिंसा:
  - किन्नर समुदाय के सदस्यों को समाज में व्यापक भेदभाव और हिंसा का सामना करना पड़ता है। उन्हें शारीरिक, मानसिक और यौन उत्पीड़न का शिकार होना पड़ता है।
  - पारिवारिक अस्वीकृति और सामाजिक बहिष्कार के कारण उन्हें अपने परिवार और समुदाय से दूर रहना पड़ता है, जिससे उनका जीवन और भी कठिन हो जाता है।

- शिक्षा:
  - शिक्षा के क्षेत्र में किन्नर समुदाय के सदस्य भारी चुनौतियों का सामना करते हैं। स्कूलों और कॉलेजों में भेदभाव, तंग करने और हिंसा के कारण उनकी शिक्षा अधूरी रह जाती है।
  - उच्च शिक्षा प्राप्त करना उनके लिए एक बड़ा संघर्ष होता है, जिससे उनके करियर के अवसर सीमित हो जाते हैं।

समाधान और समर्थन

- सरकारी नीतियां और कार्यक्रम:
  - सरकार ने किन्नर समुदाय के समर्थन के लिए विभिन्न नीतियां और कार्यक्रम शुरू किए हैं, जैसे कि शिक्षा, रोजगार और स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार।
  - 2019 में पारित ट्रांसजेंडर व्यक्ति (अधिकारों का संरक्षण) अधिनियम ने किन्नर समुदाय के अधिकारों की रक्षा करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

- सामाजिक जागरूकता और समर्थन:
  - गैर-सरकारी संगठनों (NGOs) और सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा किन्नर समुदाय के अधिकारों और समर्थन के लिए जागरूकता अभियान चलाए जा रहे हैं।
  - समाज के विभिन्न वर्गों में शिक्षा और जागरूकता के माध्यम से किन्नर समुदाय के प्रति संवेदनशीलता और स्वीकार्यता को बढ़ावा दिया जा रहा है।

इन सभी संघर्षों और चुनौतियों के बावजूद, किन्नर समुदाय के सदस्य अपनी अदम्य इच्छा शक्ति और साहस के साथ अपने अधिकारों और गरिमा के लिए लड़ रहे हैं। सामाजिक जागरूकता और समर्थन के साथ, किन्नर समुदाय के जीवन में सुधार लाने और उन्हें समाज का सम्मानित और समावेशी हिस्सा बनाने की दिशा में प्रयास जारी हैं।

किन्नर समुदाय की आवाज को पहचान और समर्थन प्रदान करना

किन्नर समुदाय की आवाज को पहचान और समर्थन प्रदान करना भारतीय समाज में समावेशिता और समानता को बढ़ावा देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह समुदाय ऐतिहासिक रूप से भेदभाव और हाशिए पर रहने का सामना करता आया है, लेकिन आधुनिक समय में उनके अधिकारों और सम्मान को सुनिश्चित करने के लिए कई कदम उठाए जा रहे हैं। इस कठिनाई से भरे सफर में, समाज को किन्नर समुदाय के अधिकारों को समझने और समर्थन प्रदान करने की आवश्यकता है। पहले, कानूनी मान्यता के माध्यम से, भारतीय सुप्रीम कोर्ट ने किन्नर समुदाय को 'थर्ड जेंडर' के रूप में मान्यता दी और उनके अधिकारों की सुनिश्चितता के लिए अधिनियमों को पारित किया। दूसरे, समाज को समान अवसर प्रदान करने के लिए शिक्षा, रोजगार, और स्वास्थ्य सेवाओं में समानता के लिए कई नीतियाँ लागू करने की आवश्यकता है। इसके अलावा, समाजिक जागरूकता के माध्यम से, किन्नर समुदाय को स्वीकार्यता के लिए जागरूक किया जा सकता है, जो मानवीय गरिमा के लिए अत्यधिक महत्वपूर्ण है। आर्थिक सहायता के जरिए और समुदायिक संगठनों के सहयोग से, किन्नर समुदाय के सदस्य आत्मनिर्भर बन सकते हैं और समाज के अंदर अपनी आवाज को सुनवा सकते हैं। इस सफलता के लिए, मीडिया और साहित्य में किन्नर समुदाय के सफलता की कहानियों को प्रमुखता देना और उनके अधिकारों की सुरक्षा के लिए कानूनी सहायता प्रदान करना अत्यंत महत्वपूर्ण है। इस प्रकार, समाज में किन्नर समुदाय की

IJAMSR

International Journal of Advanced Multidisciplinary Scientific Research (IJAMSR) ISSN:2581-4281

आवाज को पहचान और समर्थन प्रदान करके हम न केवल उनके अधिकारों को सुनिश्चित करेंगे, बल्कि एक समृद्ध और न्यायसंगत समाज का निर्माण भी संभव होगा।

संदर्भ

1. लोह, जेनिफर उंग। "वर्णन पहचान: भारत के हिजड़ों के बीच पहचान निर्माण में पौराणिक और साहित्यिक आख्यानों का नियोजन।" धर्म और लिंग 4.1 (2014): 21-39।
2. यादव, श्रीमती शुभदा एस., कविता तिवाडे, और सलामा मनेर। "भारतीय संस्कृति, साहित्य और सिनेमा में क्वीर समुदाय की यथार्थवादी प्रस्तुति को नेविगेट करना।" विचित्र अध्ययन और साहित्य: प्रकृति, दायरा और भविष्य (2022): 46।
3. बानो, शमेनाज़। "भारत में दलितों और अन्य वंचित वर्गों के उत्थान में एक संक्रमणकालीन शक्ति के रूप में साहित्य।" एंग्लिस्टिकम। जर्नल ऑफ़ द एसोसिएशन-इंस्टीट्यूट फ़ॉर इंग्लिश लैंग्वेज एंड अमेरिकन स्टडीज़ 8 (2019) ।
4. मंडल, विकास चंद्रा, और ब्रिंटिका दास। "नगरकीर्तन (2017) का पुनरावलोकन और भारतीय संदर्भ में हिजड़ा (ट्रांसजेंडर/थर्ड जेंडर) समुदाय को संबोधित करना।"
5. एस्किसिओग्लू, लेले। उत्तर उपनिवेशवाद से परे: भारतीय और नाइजीरियाई साहित्य में शहरी और सामाजिक यथार्थवादी मोड़। डिस. कार्लटन यूनिवर्सिटी, 2022।
6. मोनाको, एंजेलो। "उत्तर औपनिवेशिक भारत में कल्पना और इतिहास: अरुंधति रॉय के वैश्विक विरोधी उपन्यास का मामला।" यूरोपीय दक्षिण 3 (2018) से: 57-70।
7. नजीर, फिरदौस. "वोइसिंग द अनवॉइस्ड: अ स्टडी ऑफ थर्ड जेंडर कंडीशन्स थ्रू द मिनिस्ट्री ऑफ अटमोस्ट हैप्पीनेस।" (2021)।
8. डिसूजा, शरीन, एट अल। "कोविड-19 वैक्सीन निर्णय लेना: भारत में ट्रांसजेंडर और विकलांगता समुदायों के बीच विश्वास।" जर्नल ऑफ कम्युनिकेशन इन हेल्थकेयर (2024): 1-10।
9. शेलार, संजय तुलसीराम। "भारत की स्वतंत्रता के बाद उच्चवर्गीय महिलाओं की स्थिति।" अंतरविषयक अध्ययन के लिए स्कॉलरली रिसर्च जर्नल: 96.
10. दास, विष्णुप्रिया। अंतरंग संभावनाओं को शामिल करना: भारत में डेटिंग और सहायक ऐप उद्योगों में उत्पादन संस्कृतियाँ। डिस. 2021.